International Journal of Hindi Research
www.hindijournal.com
ISSN: 2455-2232
Received: 28-09-2021, Accepted: 14-10-2021, Published: 28-10-2021
Volume 7; Issue 5; 2021; Page No. 108-110

# गिरीश कर्नाड के नाटकः मिथकीय एवं लोक कथा पर आधारित आधुनिक स्त्री–पुरुष संबंधों की व्याख्या ('ययाति'और 'हयवदन' के विशेष संदर्भ में)

**एन एम श्रीकांत**
सहायक आचार्य, हिंदी विभाग, पय्यनूर कॉलेज, पय्यनूर, केरल, भारत

**सारांश**
गिरीश कर्नाड भारतीय नाट्य जगत में पौराणिक एवं मिथकीय आयामों को आधार बनाकर आधुनिक स्त्री–पुरुष संबंधों का गहरा चित्रण अपने नाटकों में करते हैं। वर्तमान समय में स्त्री पुरुष संबंधों पर विचार करना अनिवार्य है। समाज में संतुलित अवस्था बनाए रखने के लिए स्त्री एवं पुरुष का समान रूप से आगे बढ़ना जरूरी है। आधुनिक समाज में पूर्णता की तलाश में भटकते हुए लोग अनेक प्रकार के अंतर्द्वंद्व एवं संघर्ष का सामना करते हैं। इन अंतर्द्वंद्वों के कारण स्त्री एवं पुरुष के संबंधों पर गहरा बदलाव आया है। करनाड जी अपने नाटकों की सहायता से आधुनिक समाज के अंतर्द्वंद्व को व्यक्त करते हैं। अपने नाटकों में ऐतिहासिक पौराणिक एवं मिथकीय संदर्भों की सहायता से आधुनिक स्त्री पुरुष संबंधों की व्याख्या करते हैं। करनाड जी अपने नाटकों की सहायता से स्त्री पुरुष के आंतरिक संघर्षों, तनावों एवं यौन संबंधों की विडंबनाओं को प्रस्तुत करते हैं। प्रस्तुत आलेख में उनके नाटक ययाति और हयवदन की सहायता से मिथकीय एवं लोक कथा के आधार पर आधुनिक स्त्री पुरुष संबंधों की व्याख्या का अध्ययन करने का प्रयास किया है पर है।

**मूलशब्द:** 'ययाति'और 'हयवदन', आधुनिक स्त्री–पुरुष संबंधों की व्याख्या

## प्रस्तावना

गिरीश कर्नाड ने कन्नड़ नाट्य जगत की पुरानी मान्यताओं को तोड़कर आधुनिक जीवन की विचारधारा को स्थापित करने का प्रयास किया है। उनके नाटकों में ऐतिहासिक एवं पौराणिक या मिथकीय आयामों को आधार बनाकर और समसामयिक जीवन की समस्याओं विशेषकर स्त्री–पुरुष संबंधों पर आधारित नाट्य रचना अंत्यत विवादस्पद एवं चर्चित रही है। जयदेव तनेजा के अनुसार– "अपने वर्तमान समय, समाज, और सरोकारों–समस्याओं को समझने तथा नाट्य के रूप में प्रभावशाली ढंग से प्रस्तुत करने के लिए महाभारत, पुराण, इतिहास, जातक एवं लोककथाएँ आरंभ से ही गिरीश कर्नाड को आकर्षित और प्रेरित करती रही हैं। मानवीय और विशेषतः स्त्री–पुरुष संबंधों का रहस्यमय तिलिस्मी संसार उनके नाटकों का केंन्द्रीय विषय रहा है। [1]" गिरीश कर्नाड का यह प्रखर व्यक्तित्व ही उनको उनके समकालीन कन्नड़ नाटककारों से अलग विशेष स्थान दिलाता है। आधुनिक जीवन में स्त्री एवं पुरुष एक–दूसरे के प्रति भिन्न दृष्टिकोण रखते हैं। स्त्री पुरुष में अपनी आस्था खो बैठी है। उसे लगता है कि पुरुष ने न केवल उसे उसके अधिकारों से वंचित रखा है बल्कि उसे मानव होने का दर्जा तक नहीं दिया है। फिर चाहे वह पिता हो, पति हो, बेटा हो या भाई। समय के साथ–साथ स्त्री–पुरुष के प्रेम संबंधों में परिवर्तन आया है। वैवाहिक संबंधों के पौराणिक मूल्य टुटने लगे हैं। पति–परमेश्वर का दृष्टिकोण बदल गया है। पुरुष (पति) एवं स्त्री (पत्नी) के बीच विवाहेत्तर संबंध बढ़ने लगे हैं। भाई–बहन, माँ–बेटे, ससुर–बहू, पिता–पुत्री आदि के रिश्तों में अनेक बदलाव दृष्टिगोचर हुए हैं जिनको गिरीश कर्नाड अपने नाटकों की सहायता से दर्शकों के सामने रखते हैं। डॉ. जयदेव तनेजा के अनुसार "इन संबंधों में भी सामान्य और साधारण की अपेक्षा निषिद्ध एवं वर्जित संबंधों और अगम्यागमन के असामान्य रिश्ते गिरीश को अधिक दिलचस्प और सम्मोहक लगते हैं।[2]"

'ययाति' गिरीश कर्नाड का पहला पौराणिक नाटक है। यह नाटक महाभारत के एक प्रसंग पर आधारित है। ययाति एक शक्तिशाली राजा है जिसका विवाह देवयानी से होता है लेकिन शर्मिष्ठा से भी उनका रहस्य संबंध स्थापित हो जाता है। ययाति जीवन भर कामुकता के पीछे भागता रहता है। अपने बुढ़ापे से पुनः जवानी में आने के बाद भी वह यौन संबंधों से तृप्त नहीं होता। आधुनिक समाज में स्त्री एवं पुरुष में तनाव तथा संघर्ष पैदा होने का मूल कारण अपने दायित्वों से किनारा कर एक–दूसरे पर जिम्मेदारी आरोपित करना ही है। पति का यौवन नष्ट होने पर पुरु की पत्नी चित्रलेखा बहुत दुःखी होती है। वह अपने ससुर से कहती है कि यौवन के साथ–साथ उसे पुरु से संबंधित सब कुछ स्वीकारना पड़ेगा। यहाँ तक कि चित्रलेखा के शरीर को भी। साथ ही वह पूर्वजों के बनाए सभी नियमों को तोड़ कर ययाति द्वारा स्वयं को पत्नी रूप में स्वीकार सुख प्रदान करने को कहती है–

> "चित्रलेखाः (मुस्कुराकर) मैंने जब पुरुराज का वरण किया तब मुझे उनका परिचय नहीं था। मैंने वरण किया था, उनके तारूण्य को, मेरे गर्भ में चंद्रवंश की वृद्धि करने वाले पौरुष को। उन सबको आपने चूस लिया। अब उन्हें चलने के लिए भी सहारा चाहिए। आँखे दीये की रोशनी सहन नहीं कर सकती। मैने जिन गुणों का वर्णन किया था अब एक भी उनमें नहीं है, पर वे सब गुण आपमें अब भी हैं।[3]

वास्तव में, मनुष्य मात्र ही दुख और द्वन्द्व का वह कंकर है जिसमें निरंतर आर्त्त पुकार मची रहती है। चित्रलेखा एक आधुनिक स्त्री है जो समाज द्वारा नियमित नीतियों का विरोध करती है और मानती है कि व्यक्ति को अपने सुख की परवाह करनी चाहिए। उसे पुर्वजों के नैतिक नियमों को धारण करना स्वीकार्य नहीं है। भारतीय समाज में ससुर–बहू के संबंध को निषिद्ध माना गया है। वह समाज द्वारा स्वीकार्य संबंध नहीं है। गिरीश कर्नाड 'ययाति' में प्राचीन और नवीन मान्यताओं के मध्य स्त्री–पुरुष संबंधों में उभरे दुसरे द्वन्द्व का अभिव्यक्त करते हैं। ययाति नाटक के नारी पात्र कहीं पर भी अपनी परिस्थितियों के खिलाफ लड़ते हुए दिखाई नहीं देते सिवाय चित्रलेखा के। देवयानी एवं शर्मिष्ठा

अपनी परिस्थितियों में बंदे हुए प्रतीत होते हैं। लेकिन नाटक में एक ऐसा संदर्भ भी आता है जहां चित्रलेखा स्त्री–समाज के लिए बोल उठती है और यहाँ स्त्रियों के प्रति गिरीश कर्नाड की चिंता और चेतना स्पष्ट हो जाती है। वे स्त्री शोषण का कारक पुरुष को ठहराते हैं। चित्रलेखा कहती है–

"चित्रलेखाः मुझे चिल्लाने से मना करने वाले आप कौन है? मेरे अंतःपुर में आकर चिल्ला क्यों रहे हैं? मैं आपकी बहु बनना नहीं चाहती थी, पर आपने बनाय, उसका कारण क्या है? आपकी बहू को विदूषी होना चाहिए। गृहकार्य में दक्ष होना चाहिए। यहीं है न? मैंने शास्त्रविद्या भी सीखी है। विद्या की ऐसी पुतली को घर लाकर उसके पाँव में सनातन श्रृंखला पहनाना आपका ही खेल है। मैंने भाइयों से यह भी सीखा है कि वन्य जंतुओं से घबराना नहीं चाहिए तो क्या आपसे डर जाऊँ?"[4]

इस कथन में जिस शास्त्रविद्या का जिक्र किया गया है वह आधुनिक समाज में स्त्री के शिक्षित होने से है। आज की स्त्रियाँ शिक्षा अर्जित कर रहीं हैं। उनको बहू या पत्नी बनाकर घर में बंद नहीं किया जा सकता। वह समझती हैं कि स्त्री को घर में बंद करना पुरुषों की ही साजिश है। इस प्रकार नाटककार यहाँ संबंधों के अंतर्द्वंद्वों के मध्य स्त्री–मुक्ति की बात रखते हैं।

'हयवदन' नाटक लोक–कथा पर आधारित नाटक है, जो देवदत्त, पद्मिनी एवं कपिल के बीच के त्रिकोणीय प्रेम संबंधों एवं व्यक्ति–जीवन के अधुरेपन को व्यक्त करता है। नाटक का आरंभ ईश्वर के अपूर्ण होने के संदर्भ से होता है। हाथी के मस्तक एवं मनुष्य के शरीर से युक्त ईश्वर को पूर्ण रूप से अपूर्ण माना जाता है। न वे पूर्ण रूप से मनुष्य हैं और न ही पूर्ण रूप से जानवर। मनुष्य भी अपूर्ण है और वह अपने अंदर की इस अपूर्णता को दूर करने के लिए हमेशा पूर्णता की तलाश में भटकता रहता है। स्त्री–पुरुष संबंधों पर केंद्रित यह नाटक मूल रूप से स्त्री एवं पुरुष के अधूरेपन की कथा कहता है।

इस नाटक के आरंभ में ही हयवदन भागवत के साथ दिखाई देता है। हयवदन का चेहरा घोड़े का है और शरीर मनुष्य का। इस रूप में हयवदन मनुष्य की अपूर्णता का द्योतक है। गिरीश कर्नाड ने नाटक में यक्षगान शैली का प्रयोग करते हुए लोककथा के आधार पर आधुनिक स्त्री–पुरुष संबंधों की अपूर्णता को परखने की कोशिश की है।

मानव मन की चंचलता और द्वंद्वात्मकता को नाटककार कर्नाड ने यहाँ व्यक्त किया है। पुरुष किस प्रकार स्त्री के सौंदर्य पर अपना होश खो बैठता है। किस प्रकार कपिल पद्मिनी के लिए देवदत्त का प्रेम प्रस्ताव लेकर आता है लेकिन वह स्वयं उस पर आकर्षित हो जाता है। यह एक अस्थिर मानव–मन की पहचान है। जिससे स्त्री और पुरुष दोनों ही अछूते नहीं हैं।

पौराणिक लोककथा को आधुनिक संदर्भ में समेटकर स्त्री–पुरुष संबंधों को व्याख्यायित करता यह नाटक अपने आप में विशेष महत्व रखता है। नाटक में जहाँ देवदत्त को बुद्धि एवं कपिल को शरीर के रूप में संकल्पित किया गया है वहाँ पद्मिनी को पूर्णता के अन्वेषक के रूप में दर्शाया गया है। जयदेव तनेजा के अनुसार– "कथ्य की दृष्टि से 'हयवदन' व्यक्ति के अधूरेपन की छटपटाहट और पूरेपन की तलाश (पद्मिनी), बुद्धि (देवदत्त) तथा देह (कपिल) के संघर्ष और स्त्री–पुरुष संबंधी पेचीदा गुत्थी को बेहद आकर्षक लोक–रंग में प्रस्तुत करता है।" [5]

नाटक में इन तीनों के बीच के संबंधों की रोचकता तब और बढ़ जाती है जब देवदत्त और कपिल के सिर की अदला–बदली हो जाती है। कपिल का सिर देवदत्त के लग जाता है और देवदत्त का सिर कपिल के शरीर से लगा दिया जाता है। अब समस्या आती है कि पद्मिनी किसके साथ जाए। इस पर तीनों में बहस होती है। एक स्त्री होने के नाते पुरुष की हर बात को स्वीकारना पद्मिनी के लिए आवश्यक है क्योंकि यही समाज में सालों से चलता आ रहा है। स्त्री का अपना कोई महत्त्व नहीं है।

"पद्मिनीः (तत्परता से) चलो अब। (विराम) ठहरो। (कपिल के पास जाकर) उदास मत हो, कपिल फिर मिलेंगे, है न? (दबी आवाज़ में ) सुनो, देवदत्त के साथ जाना मेरा धर्म है। पर जा तो रही हूँ तुम्हारी ही देह के संग। इससे तुम्हे संतोष होना चाहिए। (देवदत्त के पास जाकर) अच्छा, कपिल, चलती हूँ।"[6]

स्त्री के रूप में पद्मिनी द्वारा यह व्यक्त करना कि वह देवदत्त के साथ जा तो रही है लेकिन उसे अब भी चाह कपिल के शरीर के साथ रहने की ही है। स्त्री के बौद्धिक एवं भौतिक सुखों की कामना को अभिव्यक्त करता है। अंततः देवदत्त का शरीर शिथिल पड़ने लगता है। कपिल के शरीर पर देवदत्त के मस्तिष्क का प्रभाव पड़ना आरंभ हो गया है। लेकिन पद्मिनी को उस शरीर से लगाव हो जाता है। दैहिक इच्छाओं की पूर्ति उसे उसी शरीर से होती है। कपिल का भी शरीर पूर्व स्थिति में आ जाता है। पद्मिनी अब फिर से अपूर्ण हो जाती है। आधुनिक स्त्री एवं पुरुष की भी यही दशा है। आज विवाह संबंध का असफल होना एवं युवक–युवतियों में लिविंग टुगेदर के संबंध इसी कारण से बढ़ते जा रहे हैं।

पद्मिनी (स्त्री) अंत तक पूर्णता की खोज में रहती है। देवदत्त और कपिल पद्मिनी के लिए लड़कर जान दे देते हैं। और अंत में उसे अकेला छोड़ जाते हैं। इस नाटक से यह स्पष्ट है कि स्त्री के बिना पुरुष का एवं पुरुष के बिना स्त्री को कोई अस्तित्व नहीं है। संपूर्णता की तलाश आज स्त्री–पुरुष में पूर्ण रूप से अपूर्ण के पर्याय बनकर रह गए हैं। डॉ. ओमप्रकाश शर्मा के अनुसार– "परिपूर्णता की इस चाह का पूरा होना असंभव ही नहीं, अंततः असहनीय यातना और त्रास का कारण भी है। नाटक इसी चाह और उसकी यातना का अन्वेषण करता है। नाटक में एक अन्य आयाम शरीर और मन के द्वंद्व का भी है जिसमें दिखाया गया है कि शरीर चाहे जितना प्रबल हो अंततः मन के अनुसार ही ढलने लगता है। शरीर की अपनी अलग पीड़ा को पहचानने की कोशिश भी की गयी है। ....इस अंतर्कथा में आदमी के ऊपर व्यंग्य तो है ही, पूर्णता की चाह की परिणति का ट्रेजिक पहेली भी उभर आयी है।" [7]

इस प्रकार कह सकते हैं कि गिरीश कर्नाड के नाटकों में स्त्री–पुरुष संबंधों की उस धरातल तक छान–बीन की गई हैं जहाँ तक उनके समकालीन कन्नड़ नाटककार पहुँच नहीं पाए हैं। अपने नाटकों में वे समाज में निषिद्ध एवं अवैध रूप से घोषित सबंधों की व्याख्या तथा पड़ताल करते नज़र आते हैं। उन्होंने व्यक्ति स्वातंत्र्य को अपने नाटकों का मूल आधार बनाया है। आज प्रत्येक व्यक्ति फिर चाहे वह स्त्री हो या पुरुष अपने स्वत्व के अन्वेषण में लगे हुए हैं। वे अपूर्ण होने के चलते पूर्णता की खोज में भटक रहे हैं। गिरीश कर्नाड के नाटकों के सभी पात्र किसी न किसी रूप से इसी पूर्णता की और अग्रसर हैं लेकिन वे पूर्णता को प्राप्त नहीं कर पाते और यही जीवन कि विडंबना तथा संबंधों का अंतर्द्वंद्व अभिव्यक्ति पाता है। कर्नाड जी अपने नाटकों की सहायता से स्त्री–पुरुष के आंतरिक संघर्षों, तनावों, अस्तित्व एवं उनसे संबंधित प्रश्नों तथा उनकी अस्मिता को पहचानने की सफल कोशिश करते हैं। इनके नाटक ऐतिहासिक, पौराणिक एवं मिथकीय पात्रों पर आधारित होने पर भी आधुनिक स्त्री–पुरुष के प्रतिनिधित्व करते नजर आते हैं। आधुनिक स्त्री–पुरुष के यौन संबंधों एवं उनकी विडंबनाओं, जिस पर बात करना या विचार करना आज भी एक टेबू माना जाता है, को गिरीश कर्नाड परत–दर–परत उघाड़ते हैं और विश्लेषित करते हैं।

## संदर्भ सूची


1. आधुनिक भारतीय रंगलोक, जयदेव तनेजा, पृ.सं.102
2. वही, पृ. सं. 102.
3. ययाति, गिरिश कर्नाड, अनुवादक बी.आर.नारायण,, पृ.सं 84
4. वही, पृ. सं. 81.
5. आधुनिक भारतीय रंगलोक, जयदेव तनेजा, पृ.सं.103.
6. हयवदन, गिरीश कर्नाड, अनुवादक–बी.वी.कारंत, पृ.सं.79.
7. स्वांतत्र्योत्तर हिन्दी रंगमंच, डॉ.ओमप्रकाश शर्मा, पृ.सं. 264–265.(उद्धृत)